विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नेट-ब्यूरो

Code No. : 71

विषयः लोक साहित्य

पाठ्यक्रम

इकाई-1 लोकवार्ता : परिभाषा, अवधारणा और वर्गीकरण

लोक कौन है? - लोकजीवन और लोकवार्ताविज्ञान की अवधारणा - नृजातीयता - परिवार-प्रकार: जन्मजात, वैवाहिक, एकल, विस्तारित (पीढ़ीगत और बहुपतित्वपरक) - परिवार में संबंधों के प्रकार - प्रत्यक्ष, साझा, यौन और वंशागत - परिवार के प्रकार्य - संबंध-नाम सम्बन्ध-प्रकार, सम्बन्धों की भूमिका - लोकवार्ता / लोक जीवन के निर्माण, संचरण और रखरखाव में संबंध और सामाजिक संगठन की भूमिका।

'लोकप्रिय पुरातनता' से 'लोकवार्ता' तक संकल्पनात्मक बदलाव - लोकवार्ता की विधाएं और प्रकार्य: नृजातीय विधा और विश्लेषणात्मक श्रेणियां - लोकवार्ता का वर्गीकरण: मौखिक, अमौखिक और मध्यस्थ विधाएँ - विधा सिद्धांत: एलन डंडीस, रिचर्ड डोर्सन, बेन एमोस, रिचर्ड बाउमन, रोजर अब्राह्म्स - लोकवार्ता के कार्य: विलियम बास्कोम, लॉरी होन्को - लोकवार्ता के लक्षण।

इकाई-2 लोकवार्ताविज्ञान का इतिहास-लेखन

'बर्बर' से 'कल्पित समूह तक लोक - आंकड़ों के रूप में लोकवार्ता और अध्ययन सामग्री के रूप में लोकवार्ता - मौखिकता बनाम साक्षरता - शास्त्रीय बनाम लोक - एक अकादमिक अनुशासन के रूप में लोकवार्ता का उद्भव - भारतेतर लोकवार्ता अध्ययन - भारत में लोकवार्ता अध्ययन उपनगरीय अध्ययन - जनजातीय अध्ययन - डायस्पोरा अध्ययन - हरित अध्ययन।

इकाई-3 लोक साहित्य

लोक साहित्य की परिभाषा और मीमांसा - लोक साहित्य के क्षेत्र: मिथक, महाकाव्य, किंवदंतियाँ लोक कथाएँ, लोकगीत, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, जबड़तोड़ - वाक्कार्य - प्रदर्शन में प्रयुक्त मौखिक कला (रंगमंच, नृत्य नाटक, चिकित्सीय मंत्र, नाट्य-विधाओं में वागाडम्बर इत्यादि।) - साहित्यिक युक्तियां - जातीय अपवाद - अफवाह - वैयक्तिक आख्यान - मौखिक इतिहास।

इकाई-4 लोकवार्ता के सिद्धांत -I : ऐतिहासिक उपागम

विकासवादी सिद्धांत - विकास की अवधारणा - एकरेखीय और बहुरेखीय उपागम - ई. बी. टेलर, जार्ज़ मुड्रोक, लेविस, मॉर्गन, जेम्स फ्रैज़र – मिथक-अनुष्ठान सिद्धांत - सौर पुराणशास्त्र अथवा तुलनात्मक भाषाशास्त्र।
जातिह्रास सिद्धांत - जातिह्रास की अवधारणा - जातिह्रास सिद्धांतों के प्रकार - मार्क्सवादी और संभ्रांत वर्ग।

विसरण सिद्धांत (एकोत्पत्तिवाद) - विसरण की अवधारणा - भारतपरक सिद्धांत अथवा बेन्फी का प्रव्रजन सिद्धांत - मिस्री स्कूल और फिनिश स्कूल अथवा ऐतिहासिक भौगोलिक पद्धति।

विसरण सिद्धांत (बहूत्पत्तिवाद) - मानसिक ऐक्य - अभिसरण बनाम समानांतरता सिद्धांत - स्वच्छन्द राष्ट्रवाद और इसकी अभिव्यक्तियाँ।

इकाई-5 लोकवार्ता के सिद्धांत -II : समकालिक उपागम

संरचनावादी उपागम - मूलभूत अवधारणाएँ - विन्यासक्रमात्मक संरचनावाद – फ़र्दिनान्द द स्यसुर की अवधारणाएं और व्लादिमीर प्रोप के सिद्धांत - लोकवार्ता के लिए प्रोप के मॉडल का अनुप्रयोग - रूपावली सम्बन्धी संरचनावाद - रोमन जैकब्सन की अवधारणाएँ और लेवी स्ट्रॉस के सिद्धांत - लोकवार्ता के लिए लेवी स्ट्रॉस के मॉडल का अनुप्रयोग।

प्रकार्यपरक उपागम - मूलभूत अवधारणाएँ - सामाजिक प्रकार्यवादी : ब्रोनिस्लाव मालिनोव्स्की,

रैडक्लिफ ब्राउन, एमिल दुर्खिम – प्रतीक-प्रकार्यवादी : क्लिफोर्ड गीर्त्ज़, विक्टर टर्नर।

मनोवैज्ञानिक उपागम - मनोविश्लेषणवाद - मूल अवधारणाएँ - सिगमंड फ्रायड - लोकवार्ता के लिए फ्रायड के सैद्धांतिक अनुप्रयोग - विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान - मूल अवधारणाएँ - कार्ल जे. युंग - लोकवार्ता के लिए युंग के सैद्धांतिक अनुप्रयोग - जैक्स लकां का सिद्धांत।

संदर्भात्मक उपागम - मूल अवधारणाएँ - प्रदर्शन के रूप में शाब्दिक कला - भाषायी और संचार मॉडल - रोमन जैकबसन - मौखिक सूत्रात्मक सिद्धांत अथवा पैरी - लॉर्ड सिद्धांत – लॉरी हांकों की बहुरूप अवधारणा।

उत्तरसंरचनापरक और उत्तर आधुनिक उपागम - उत्तर संरचनात्मवाद का अर्थ और नियम, नव शास्त्रार्थमीमांसा, पाठ, पाठ्यता, पाठपरक विश्लेषण, पॉल रिक्कर और व्याख्या के सिद्धांत - सिद्धांतों का ऐतिहासिक परिदृश्य - विसंरचना की संकल्पना और उसका सिद्धांत - देरिदा, लकाँ, फूको - लिंग सिद्धांत और उपागम - लिंग और विधा - नारीवाद और लिंग परिदृश्य – सनकी लैंगिक व्यवहार सिद्धान्त।

संकेतविज्ञान उपागम - लोक संस्कृति अध्ययनों के लिए संकेतविज्ञानपरक उपागम- चिह्न-प्रणाली और संस्कृति सबंधी फ़र्दिनान्द द सस्युर और चार्ल्स एस. पियरे का मत - विमर्श विश्लेषण सम्बन्धी दृष्टिकोण।

इकाई-6 लोकजीवन और सांस्कृतिक प्रदर्शन

प्रदर्शन के रूप में संस्कृति, इरविन गोफमैन, क्लिफोर्ड गीर्त्ज़, मिल्टन सिंगर - जीवन-यापन संस्कार और क्षेत्रीय संस्कार – आर्नल्ड वैन गेनेप, विक्टर टर्नर - प्रदर्शन केंद्रित उपागम - रोजर डी अब्राह्म्स, रिचर्ड बाउमन, रिचर्ड शेक्नर - डैल हाइम्स का वक्तृता की नृजातीयता का उपागम - लोक आख्यानों का विश्लेषण।

इकाई- 7 जन लोकवार्ता और जन-संचार माध्यम

मूल अवधारणाएं - लोकवार्ता - लोकवार्तावाद - सन्दर्भबाह्य लोकवार्ता - लोकवार्ताकरण, अनुप्रयुक्त लोकवार्ता - जन लोकवार्ता - लोकवार्ता में द्वीतीय जीवन- जन क्षेत्र में लोकवार्ता - लोकवार्ता और

संचार - लोकवार्ता और 'नव माध्यम'।

इकाई-8 लोकवार्ता और वैश्वीकरण

वैश्विक संस्कृति के सिद्धांत - आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता और वैश्वीकरण पर विमर्श – वैश्वीकरण के विचारक- जनरंजनवाद का आविर्भाव।
समाज-सांस्कृतिक जीवन में वैश्वीकरण का प्रभाव; अस्मिता के मुद्दे और अवधारणाएँ - वैश्विक बनाम ग्लोकल, एकरूपता बनाम विषमता और संकरीकरण – लोकवार्ता विधाओं और लोक प्रदर्शन के बदलते आयाम और प्रक्षेत्र - सांस्कृतिक पर्यटन - नई लोक बनावट, और विरोध-प्रदर्शन आन्दोलन - आदिम संस्कृतियों के समक्ष चुनौतियां - जैव-राजनीति।

इकाई- 9 भारतीय लोक सांस्कृतिक व्यवहार

लोक रंगमंच की विधाएँ - आख्यानापरक अभिनय - कठपुतली रंगमंच - नृत्य-नाटक - संगीत-परंपराएँ और जीवन-शैली के नमूने - नामकरण प्रणाली - व्यवसायपरक लोकवार्ता - पारिवारिक लोकवार्ता - लोक धार्मिक व्यवहार - तीर्थयात्रा और अनुष्ठान व्यवहार - मेले और उत्सव – लोक चिकित्सा संबंधी व्यवहार – लोक कला और शिल्प – लोक वास्तुकला – लोक भोजन रीतियां और पाकशाला-व्यवहार - लोक-क्रीडाएं - वेशभूषा - रीतिरिवाज – आचारिक धर्म विधि - विधिशास्त्र : वैश्विक परिदृश्य - क्षेत्रीय विविधताएँ और पाठान्तर।

इकाई-10 क्षेत्रकार्य, दस्तावेज़ीकरण और अभिलेखीय व्यवहार

क्षेत्रकार्य संचालन का वर्गीकरण: पूर्ववर्ती क्षेत्रकार्य, क्षेत्रकार्य और परवर्ती क्षेत्रकार्य. पूर्व-क्षेत्र संक्रियाएँ - 'क्षेत्र' और 'आंकड़े' संबंधी धारणाएँ - सूक्ष्म एवं स्थूल आँकड़े और वर्णन - विधियाँ और तकनीक : विधियाँ - गुणात्मक - सर्वेक्षण विधि, पर्यवेक्षण विधि, नृवंशविज्ञान विधि, उत्तर आधुनिक नृवंशविज्ञान विधि - परिसंवाद और विमर्श विधि, केन्द्रित समूह विधि - क्षेत्रकार्य, दस्तावेज़ीकरण और अभिलेखीय व्यवहार - मूर्त एवं अमूर्त संस्कृतियों का परिरक्षण और संरक्षण - क्षेत्रकार्य नैतिकता और प्रतिलिपि-अधिकार के मुद्दे - एकस्व अधिकार।